11

अहिंसा के बिरवे

पाठ-प्रवेश

कवि को चिंता है कि धरती की हवाएँ हिंसा के कारण दूषित हो गई हैं। उन्हें प्रदूषण-मुक्त करने के लिए कवि धरती रूपी बाग़ में अहिंसा के पौधे लगाने का आह्वान कर रहे हैं। कवि 'जीओ और जीने दो' के पक्षधर हैं। वे कहते हैं कि अहिंसा सुखद है और हिंसा सदा दुखदायी होती है, विनाशकारिणी होती है। हमें समय रहते चेत जाना चाहिए वरना नष्ट होने के बाद पछताने से क्या लाभ! अत: अहिंसा के पौधे उगाएँ तथा नई रोशनी के दीये जलाएँ।

पाठ-अभ्यास के उत्तर

बात पाठ की

मुख से

(क) हिंसा की फ़सलों के कारण धरती की हवाएँ प्रदूषित हुई हैं।

(ख) 'इस चमन में' से कवि का तात्पर्य भारत देश है।

(ग) हिंसा का अंत सदा दुखदायी होता है, इसलिए इससे काम नहीं चलता।

कलम से

1. (क) लोंगों के मन में अहिंसा के भाव गहरे में विद्यमान हैं।

(ख) कवि सत्य के वट वृक्ष की धरोहर की याद दिला रहे हैं।

(ग) कवि का कहना है कि अहिंसा की अलख जगाने का समय अभी खत्म नहीं हुआ है।

(घ) कविता के अनुसार अहिंसा का रास्ता सीधा होता है। इस रास्ते को अपनाने से मन, तन तथा चिंतन शुद्ध रहते हैं।

(ङ) इस सदी की त्रासदी को अहिंसा से बदला जा सकता है।

2. (क) हिंसा का अंत दुखदायी होता है।

(ख) अहिंसा का रास्ता महावीर तथा गांधी ने सुझाया था।

(ग) अहिंसा के मार्ग की कसौटी शुद्ध मन, शुद्ध तन तथा शुद्ध चिंतन है।

(घ) अहिंसा की रोटी सुखद होता है।

3. (क) (iii) (ख) (i)

बात सोच की

- छात्र स्वयं करें।

बात भाषा की

1. (क) पृथ्वी, वसुंधरा (ख) रास्ता, पथ (ग) समय, काल (घ) दीपक, दीप
   (ङ) हवा, वायु (च) बगिया, बाग (छ) सच्चा, सच (ज) पादप, तरु
2. (क) अहिंसा (ख) अशुद्ध (ग) अभाव (घ) दुखद
   (ङ) असुरक्षित (च) आदि (छ) अचेत (छ) अंधकार
3. (क) ब् + इ + र् + अ + व् + ए (ख) व् + अ + क् + त् + अ
   (ग) व् + ऋ + क् + ष् + अ (घ) शु + उ + द् + ध् + अ
   (ङ) च् + इ + अनस्वार + त् + अ + न् + अ (घ) त् + र् + आ + स् + अ + द् + ई

रचनात्मक अभिव्यक्ति

- छात्र स्वयं करें।